B.Ed paper C5

पाठ्यक्रम मूल्यांकन :- EVALUATION.

*Introduction:- मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। शिक्षा के आदान प्रदान में मूल्यांकन अपना एक विशेष स्थान रखता है। मूल्यांकन के आभाव में हमारे शिक्षण की समस्त क्रियाएँ मूल्यहीन हो जाती हैं। शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन को एक तकनीकी शब्द के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। इस तकनीकी प्रक्रिया के अंतर्गत केवल छात्रों की विषय विशेष संबंधी जानकारी प्राप्त होती है, बल्कि यह भी जानने का प्रयास करते हैं कि छात्रों के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास किस सीमा तक हुआ साथ ही पाठ्यक्रम शिक्षण विधियों आदि की सफलता के बारे में जानकारी प्राप्त करने में भी मूल्यांकन प्रक्रिया का सहारा लिया जाता है। कम शब्दों में कहें तो, मूल्यांकन व्यापक प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत पाठ्यक्रम, विषय वस्तु की उपयोगिता के विषय में निर्णय लिया जाता है।

*Definition:- मूल्यांकन को विभिन्न शिक्षाशास्त्रीयों एवं मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने अनुसार परिभाषित किया है। कुछ परिभाषाएं निम्नलिखित हैं।

⇒ According to Dandekar - "Evaluation is the process of gathering and interpreting evidences on changes in the behaviour of the students as they progress though School."

अर्थात्

"विद्यालय द्वारा हुए बालक के व्यवहार के विषय साक्ष्यों के संकलन तथा उसकी व्याख्या करने की प्रक्रिया ही मूल्यांकन है।"

⇒ N.C.E.R.T के अनुसार :- "मूल्यांकन एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि उद्देश्य किस सीमा तक प्राप्त किये गये हैं। कक्षा में दिये गये अधिगम पाठ्यक्रम, आदि कहाँ तक प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं और कहाँ तक शिक्षा के उद्देश्य प्राप्त हुए हैं।"

⇒ एम० एल० गेज के अनुसार :- "मूल्यांकन, पाठ्यक्रम का हो या शिक्षण विधि का हो हमें यह बताता है कि बालक ने किन सीमा तक किन उद्देश्यों को प्राप्त किया है।

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है की मूल्यांकन पाठ्यक्रम के द्वारा शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति की जाँच करने की व्यापक प्रक्रिया है जिसमें यह देखते हैं की बालक शिक्षा के लक्ष्य व उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल रहा अथवा नहीं, यदि सफल रहा तो कितना?

P.T.O

Scanned with CamScanner

Pg-2

(Aims of Evaluation)

* मूल्यांकन के उद्देश्य:-

1. पाठ्यक्रम, शिक्षक शिक्षण विधि पाठ्य वस्तु आदि की उपयुक्तता की जाँच करना।
2. मूल्यांकन के माध्यम से न केवल विद्यार्थीयों की योग्यताओं बल्कि उनकी रुचि मनोवृत्तियों आदि के संबंध में उचित जानकारी प्राप्त करते हैं।
3. मूल्यांकन से अधिगम, शिक्षण विधि में वांछित सुधार एवं विश्वसनीय जानकारी प्राप्त करते हैं।
4. मूल्यांकन के आधार पर विद्यार्थीयों की उपलब्धियों के संबंध में भविष्यवाणी की जा सकती है।
5. विद्यार्थीयों के व्यवहार संबंधित परिवर्तन उनकी प्रगतियों तथा उन्नति में बाधक कठिनाइयों की जाँच करना।
6. शिक्षण के विभिन्न अंगों की कमियों की जानकारी प्राप्त करके उनके समाधान के लिए मूल्यांकन के माध्यम से मजबूत आधार प्राप्त होता है।
7. मूल्यांकन के आधार पर ही छात्रों को शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन प्रदान किया जाता है।
8. उद्देश्यों की सीमा के संबंध में निश्चित जानकारी प्राप्त करना।
9. शिक्षण के उद्देश्यों को स्पष्ट करना एवं उसकी उपयुक्तता की जाँच करना।
10. अधिगम की दिशा में विद्यार्थीयों को प्रेरित करना।

* मूल्यांकन का महत्व:- Importance of Evaluation:-

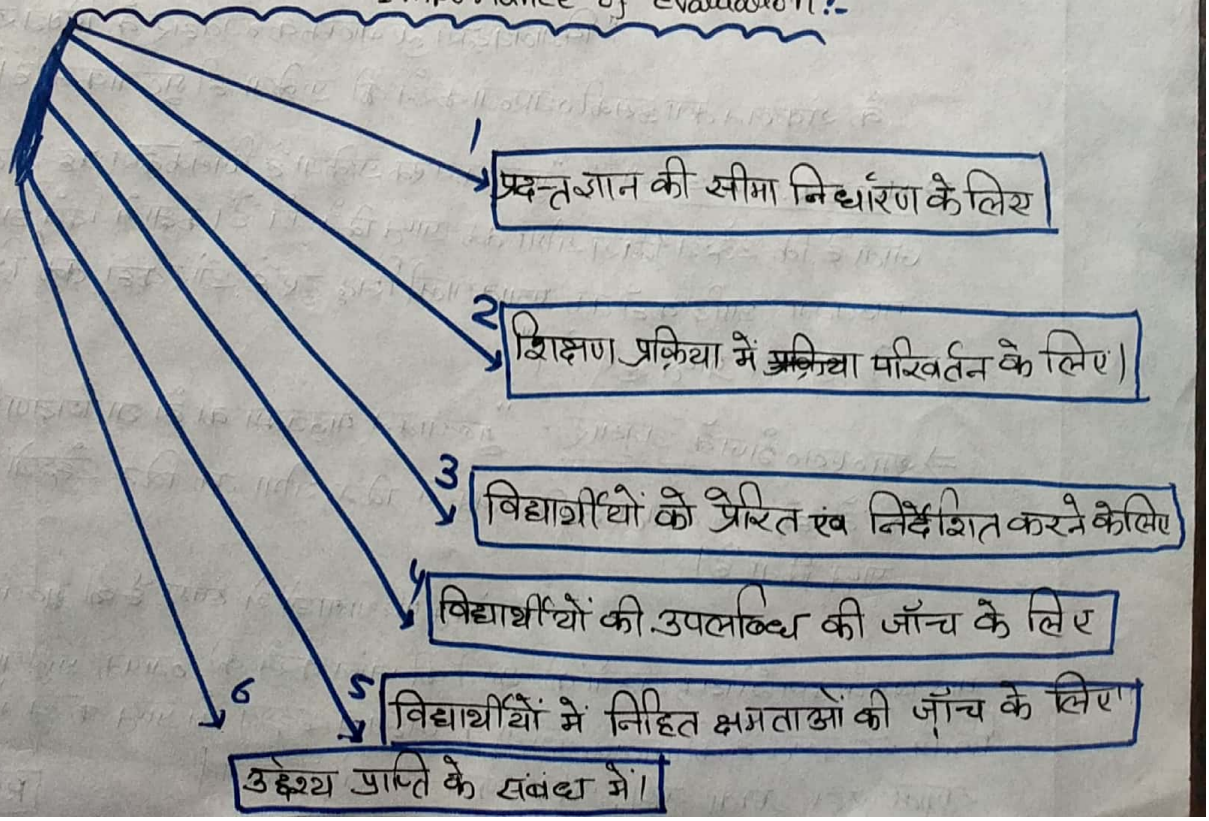

Scanned with CamScanner

1. प्रदत्त ज्ञान की सीमा निर्धारण के लिए :- पाठ्यक्रम संबंधी अनुभवों को ग्रहण करने एवं विभिन्न परिस्थितियों से उनका प्रयोग करके ~~विद्यार्थी~~ छात्रों के द्वारा जो भी ~~उनका~~ व्यवहार होता है उसी के माध्यम से यह ज्ञात हो जाता है छात्र के ज्ञान की सीमा कहा तक है।

2. शिक्षण प्रक्रिया में परिवर्तन के लिए :- जब बालकों को किसी विषय को पढ़ाया जाता है पढ़ाने के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों का सहारा लिया जाता है। वर्ग में शिक्षक द्वारा मूल्यांकन करके यह देखा जाता है की पढ़ाए गये विषय को कितने छात्रों द्वारा समझा गया, यदि शिक्षक यह पाता है की अधिकतर छात्रों ने पढ़ाये गये पाठ को नहीं समझ पाए तो, शिक्षक अपनी शिक्षण विधि में परिवर्तन करके पुनः पाठ को पढ़ाते हैं, एवं सभी छात्र भी आसानी से समझ जाते है।

3. विद्यार्थियों को प्रेरित एवं निर्देशित करने के लिए :- मूल्यांकन से शिक्षक यह ज्ञात कर लेते है की किस छात्रों को आगे कैसा निर्देशन देना है, एवं कहाँ पर किस छात्रों को प्रेरित करना है। प्रत्येक छात्र एक दुसरे से भिन्न होते है. मूल्यांकन द्वारा हर छात्र की आवश्यकता नुसार प्रेरित व निर्देशित करने में सुविधा होती है

4. विद्यार्थियों की उपलब्धि की जाँच के लिए :- परीक्षा के माध्यम से छात्र मौखिक व लिखित रूप से अपनी योग्यताओं को प्रदर्शित करते हैं। इस मौखिक व लिखित परीक्षाफल के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जाता है की छात्र में निहित क्षमता, योग्यता का विकास कितना हुआ, छात्रों के उत्तर द्वारा उनकी उपलब्धि की जानकारी प्राप्त होती है। कहाँ पर छात्र को क्या कठिनाई आई उसका पता लगाकर समाधान का प्रयास किया जाता है।

5. विद्यार्थियों में निहित क्षमताओं की जाँच के लिए :- शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रो का मानसिक, शारीरिक, भावनात्मक विकास करना है। मूल्यांकन के माध्यम से बालक की क्षमताओं की जाँच की जाती है, एवं यह देखा जाता है की किस छात्र की क्या क्षमता है, उसकी क्षमता में कितना विकास हुआ है, एवं विकास कहाँ तक करना है। यह सभी जानकारी मूल्यांकन से प्राप्त की जाती है।

6. उद्देश्य प्राप्ति के संबंध में :- मूल्यांकन के बिना छात्रों में निहित क्षमताओं एवं योग्यताओं के संबंध में जानकारी प्राप्त नहीं हो सकती है। इसके बिना यह पता नहीं चल सकता की छात्रों की क्षमता का विकास कहाँ तक करना है, किस प्रकार के परिवर्तन छात्रों में कहाँ तक हो रहे हैं, एवं कैसे उनकी योग्यताओं, एवं क्षमताओं का विकास किया जा सकता है।

अतः कह सकते है की मूल्यांकन शिक्षा के उद्देश्य को जाँचने का एक महत्वपूर्ण साधन है जो शिक्षा के लक्ष्य, उद्देश्य आदि के बारे में बताता है।

P.T.O

Scanned with CamScanner

Evaluation Techniques (Methods/Types)
[मूल्यांकन की विधि/प्रकार]:

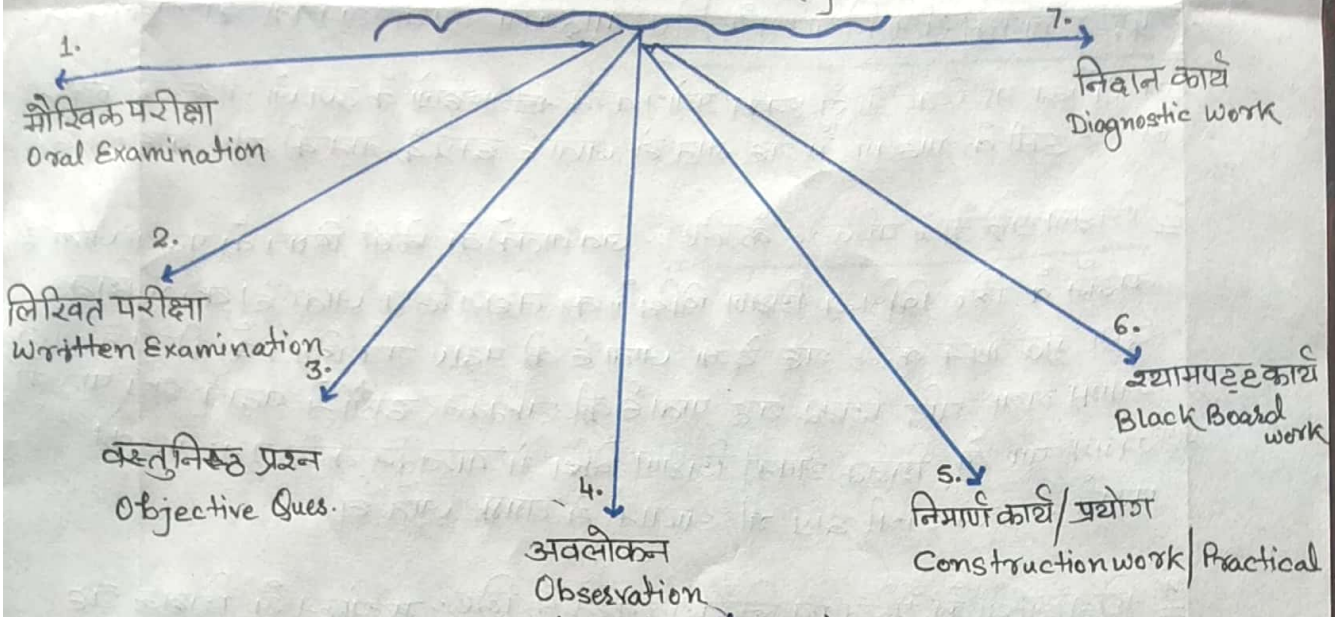

1. **मौखिक परीक्षा**:- इस विधि मे परीक्षार्थी (Student) एवं परीक्षक (Teacher) दोनों आमने-सामने बैठते है। परीक्षक प्रश्न पुछते है एवं परीक्षार्थी पुछे गये प्रश्न का उत्तर देते है। इस विधि में परिभाषा, सूत्र, नियम एव अन्य प्रश्न पुछे जाते है।

2. **लिखित परीक्षा**:- लगभग हर विद्यालयल में इस विधि का उपयोग किया जाता है। हर कक्षा चाहे छोटी हो या बड़ी सभी में यह विधि प्रचलित है। इसके अंतर्गत एक प्रश्न पत्र सभी छात्रों को दे दिया जाता है, जिसमे, जिसमें लघु, अतिलघु, एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्न पुछे जाते है। इन सभी प्रश्नों का उत्तर देने के लिए छात्रों को एक निश्चित समय दिया जाता है। यह प्रश्न शिक्षकों द्वारा तैयार किया जाता है। इस परीक्षा से छात्रों के अर्जित ज्ञान एवं स्मरण (याददाश्त) शक्ति का पता लगाया जाता है।

3. **वस्तुनिष्ठ प्रश्न**:- वर्तमान समय में इस विधि का प्रयोग अधिक हो रहा है। इसके अंतर्गत संक्षिप्त उत्तर के प्रश्न, रिक्त स्थान की पुर्ति, मिलान, एवं बहुविकल्प प्रश्नों का प्रयोग करते है। इसमें चार में से एक उत्तर सही होता है। इस विधि के प्रश्नो में विश्वसनीयता, वैधता, आदि विशेषताए होती है।

4. **अवलोकन**:- इस विधि में कक्षा में छात्रों किये गये कार्य की जॉच कर उनकी उपलब्धि एवं समझ की जॉच करते है।

5. **निर्माण कार्य/प्रयोग कार्य**:- इस विधि का प्रयोग कुछ विषय में करते है, जैसे विज्ञान क्योंकि विज्ञान केवल सिद्धांत पर ही आधारित नहीं है, बल्कि प्रयोग पर भी आधारित है। बालक के प्रयोगिक कार्य के आधार पर भी विषयवस्तु का मूल्यांकन किया जाता है।

6. **श्यामपट्ट कार्य**:- इसमें कक्षा के बालकों को बारी-बारी से Black Board पर बुलाकर प्रश्न हल कराया जाता है। जिससे यह ज्ञात होता है की बालकने कहाँ तक ज्ञान प्राप्त किया।

7. **निदान कार्य**:- इसमें छात्रों की कमीयों, भूल, कठिनाइयो आदि का निदान किया जाता है।

* **निष्कर्ष**:-